International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 466-467

अराजकतावाद विवेकवादी राजनितिक दर्शन

अखिलेश त्रिपाठी

राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

अराजकतावाद शब्द की व्युत्पत्ति यूनानी शब्द एनार्किया से हुआ है जिसका शाब्दिक अर्थ है ''शासन का अभाव''। अतएव अराजकतावाद एक क्रान्तिकारी विचार है जो राज्य तथा राजकीय शासन का उन्मूलन कर उसके स्थान पर एक राज्यविहीन तथा वर्गविहीन समाज का पुनर्गठन चाहता है।[१] क्रोपटकिन, बाकूनिन, प्रोधॉ, यूरो, टालस्टाय, विलियम गाडविन आदि प्रमुख अराजकतावादी हैं। आराजकतावाद का यह अर्थान्वयन किया जाता है, किसी व्यवस्था का पूर्णतः अभाव। परन्तु अराजकतावादियों की यह धारणा नहीं है कि समाज में कोई व्यवस्था न हो प्रत्युत् अराजकतावादी मात्रा शासन व्यवस्था के अवसान के पक्ष में है।[२] समाजवादी समाज में शासन सत्ता के अस्तित्व को मात्रा इसीलिए नहीं बनाये रखना चाहते हैं कि यह सुव्यवस्था के लिए अपरिहार्य है प्रत्युत शासन सत्ता के माध्यम से समाजवादी समाज में विद्यमान शोषण का उन्मूलन करना चाहते हैं। मार्क्सवादियों की दृष्टि में अराजकतावाद का ध्येय उचित है, क्योंकि अराजकतावाद भी आर्थिक शोषण के आधार पर परिनिर्मित वर्ग विभेद को समाप्त करना चाहता है। परन्तु मार्क्सवादी अराजकतवाद के इस बात से सहमत नहीं है कि समाज में विद्यमान वर्तमान शासन व्यवस्था का अन्त कर देने से भविष्य में भी शोषण का अन्त हो जायेगा। मार्क्सवाद सर्वहारा वर्ग का शोषण करने वाली व्यवस्था का अन्त करना चाहता है। अराजकतावादी सम्प्रभुता एवं राज्य का अवसान करना चाहते है।[३] अराकतावाद राज्य एवं सम्प्रभुता के साथ–साथ व्यक्तिगत सम्पत्ति का भी उन्नमूलन करना चाहता है। मेरे तेरे भाव की समाप्ति ही इसका उद्देश्य है।[४]

अराजकतावादी संघों में संगठित एक विकेन्द्रित समाज व्यवस्था की प्रतिस्थापना करना चाहता है। अराजकतावादी व्यवस्था में राज्य अथवा शक्ति का निरन्तर अभाव होगा। राज्य का स्थान यहाँ ऐच्छिक संघ लेगें जिनकी सांगठनिक संरचना प्रादेशिक अथवा व्यवसायिक आधार पर होगी। इन संघों का परिचालन सरलता से जटिलता की ओर होगा। लेकिन अराजकतावादी व्यवस्था की आधारशिला छोटे–छोटे संघ ही होंगे। इस प्रकार अराजकतावाद प्रादेशिक एवं व्यवसायिक विकेन्द्रीकरण के प्रबल पक्ष पोषक हैं। अराजकतावादियों के अनुसार राज्य की सेनाएं वाह्य आक्रमण को रोकने में असमर्थ रही है तथा नागरिक सेनाओं के हाथों उनकी पराजय हुई है।[५] फलस्वरूप सम्पूर्ण समाज संयुक्त होकर सफलतापूर्वक अराजकतावादी समाज की सुरक्षा करेगी। अजराजकतावादी विशेष कार्यों के लिए अस्थायी समुदायों के परिनिर्माण के हिमायती हैं। अराजकतवादी व्यवस्था की प्रतिस्थापना के क्या साधन और उपाय होना चाहिए? अराजकतावादी साहित्य में यत्रा–तत्रा बिखरे मिलते हैं। इस सन्दर्भ में यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि अराजकतावादी समष्टिवादियों के साधनों और उपायों से अपनी सहमति जताते हैं।[६]

अराजकतावादियों की धाराणा है कि मात्रा ''अराजकतावादी समाज अथवा राष्ट्र'' में ही व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का पूर्ण विकास कर सकता है। व्यक्तित्व के विकास के लिए वाह्य बन्धनों का अभाव नितान्त आवश्यक है। अराजकतावादी व्यवस्था ही परिवेश परिनिर्मित करता है जिसमें व्यक्ति पूर्ण स्वतंत्राता की अनुभूति करेगा। अराजकतावाद तीन प्रकार की स्वतंत्राताओं का प्रस्ताव करता हैं–

1. यह व्यक्ति को उत्पादक की हैसियत से पूंजीवादी वर्ग के बन्धनों से मुक्त करेगा।
2. अराजकतावाद व्यक्ति को नागरिक की हैसियत से स्वतंत्राता प्रदान करेगा।
3. वह व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से नैतिक विकास के अवसर प्रदान करेगा।

शासन के स्वरूप के सम्बन्ध में अराजकतावादियों का विचार है कि क्या सरकार आवश्यक है? आर्थिक क्षेत्रा में अराजकतावादी सार्वजनिक समष्टिवाद में विश्वास रखता है[७] प्रिन्स क्रोपाटकिन के शब्दों में ''समस्त वस्तुओं पर प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है और यदि प्रत्येक पुरुष एवं स्त्राी वस्तुओं के उत्पादन में उचित सहयोग प्रदान करते हैं तब उसमें प्रत्येक सदस्य द्वारा उत्पन्न की हुई वस्तुओं का उपयोग करने का अधिकार रखता है।[८]

यहाँ पर प्रश्न पैदा होता है कि प्रत्येक का भाग न्यायपूर्वक स्थापित करने के लिए क्या राज्य का होना आवश्यक नहीं है?अराजकतावादी इसके विपक्ष में इस तथ्य पर बल देते हैं कि प्रत्येक राज्य का कार्य केवल यही है वह प्रत्येक का भाग अन्यायपूर्वक निश्चित करे जहाँ तक स्वेच्छाचारी सरकार और उच्च वर्गीय सरकार का सम्बन्ध है वहाँ तक इस विवरण की सत्यता स्पष्ट है। एक या कुछ कुलीन व्यक्तियों का शासन समस्त शासन के विपरीत है।[९] यह सदैव इस बात का प्रयास करता है कि उत्पादन का असमान विभाजन करके पूंजीपति वर्ग एवं सम्पन्न वर्ग को अधिक भाग दिया जाय। परन्तु यह अराजकतावादियों के अनुसार बहुसंख्या द्वारा परिनिर्मित प्रतिनिधि सरकार पर लागू होता है, न केवल आधुनिक राज्य वरन् राज्य का कोई भी स्वरूप जिसका अस्तित्व सम्भव है अनावश्यक और हानिकारक है। इसके वे निम्नलिखित कारण बताते हैं–

(1) वर्तमान राज्य सार्वजनिक वस्तुओं पर कुछ व्यक्तियों के एकाधिकार स्थापित करने का साधन मात्रा है। इस कारण इस एकाधिकार का अन्त करने के लिए जिसको वह संरक्षण प्रदान करता है राज्य पर विश्वास नहीं किया जा सकता है। इससे यह सहज निष्कर्ष निकलता है कि अन्य किसी संगठन को राज्य का स्थानापन्न बिना पूंजीवाद का अन्त नहीं हो सकता। राज्य पर एकाधिकार कर लेने और उसके प्रयोग से समाज का तात्विक परिवर्तन करना असम्भव है जैसा कि समाजवादियों का विचार है लेकिन अराजकतावादियों के अनुसार उनका यह विचार अधिकार रहित है। [१०]

(2) उपर्युक्त तर्क वर्तमान राज्य पर ही नहीं वरन् प्रत्येक राज्य पर लागू होता है क्योंकि राज्य एक राष्ट्रीय प्रतिनिधि संस्था है लेकिन राज्य प्रत्येक संस्था पर समस्त नागरिकों का मत नहीं ले सकता। इसलिए यह अत्याचारपूर्ण नहीं है तो अवश्य ही एक प्रतिनिधि सरकार द्वारा चलाया जाना चाहिए। इसका तर्क यह है कि एक

व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का पूर्णरूपेण प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता। इसलिए अराकतावाद इस सिद्धान्त का विरोधी है और अल्पज्ञों के शासन के स्थान पर विशेषज्ञों के शासन को स्थानापन्न करना चाहता है।

इसलिए प्रतिनिधि सरकार या तो आवश्यक होती है या तो वह प्रतिनिधि ही नहीं होती। सामान्य संकल्प को रखने का तरीका है कि सब व्यक्तियों की एक सभा आयोजित की जाय, प्रत्येक प्रश्न के ऊपर सामान्य संकल्प की जानकारी के लिए एक प्रतिनिधि निर्वाचित किया जाय। यह उपाय प्रतिनिधि सरकार की कार्य क्षमता में अविश्वास पैदा करता है। प्रत्येक शासन में शक्ति का महत्वपूर्ण स्थान रहता है, लेकिन सरकार जो शक्ति पर आधारित होती है, इस शक्ति के उपयोग करने पर ही चल सकती है और उस शक्ति को उपयोग में लाने के लिए मनुष्यों की आवश्यकता पड़ती है, जिन पर उनका प्रयोग किया जाए। इसीलिए इनके मतानुसार सरकार अपनी प्रकृति से ही शक्ति का प्रयोग करके समाज में वर्ग विभाजन पैदा करती है। इस प्रकार इन अराजकतावादियों के अनुसार आन्तरिक एवं वाह्य युद्ध इन सरकारों के कारण ही पैदा होते हैं। सरकार का अर्थ है मजदूरी, बहिष्कार और प्राथक्य। इसके विपरीत अराजकतावाद का अर्थ है–स्वततंत्राता और सहयोग। सरकार अहंम् भाव बोध पर आधारित है, अराजकतावाद मातृत्व पर। एक अन्य अराजकतावादी विचारक के अनुसार ''हमें सैनिक संगठन की आवश्यकता इसलिए नहीं पड़ती है कि हमने पृथक्क रूप से अपने को बहुत से राष्ट्रों में विभाजित कर लिया है, हमको कानून के संरक्षण की आवश्यकता इसीलिए पड़ती है कि व्यक्तिगत रूप से एक दूसरे से पृथक हो गये हैं।''

अराजकतावादियों का तर्क है कि स्वतंत्रा प्रबन्ध और स्वतंत्रा सहयोग के नियम का पालन समाज को प्राकृतिक जन समूहों में विभक्त कर देगा। वर्तमान राष्ट्रों ने समाज को कृत्रिाम समूहों में बांट दिया है। प्राकृतिक संघ की प्रतिस्थापना इतना सामन्जस्यपूर्ण और इतना कार्यशील होगा कि वह साधारण संघर्षों (जिसकी सम्भावना कम है) से विचलित नहीं होगा। अराजकतावादी भी अपनी विचारधारा का आधार मार्क्सवादी सिद्धान्तों को मानते हैं तथा कुछ साम्यता भी है। मार्क्सवाद के अनुसार समाज को नियन्त्राण एवं शोषण से बचाने के लिए उस व्यवस्था का ही अन्त करना है जिसके द्वारा ये उत्पन्न होते हैं। यदि समाज में शोषण ही नहीं रहेगा तो सरकार की आवश्यकता ही नहीं होगी। इसी सिद्धान्त को अराजकतावादी विचारक अपनी विचारधारा का आधार मानते हैं।

सन्दर्भ

1. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या 135।
2. गिल्ड सोशलिज्म : जी0 डी0 एच0 कोल रिस्टेटेड पब्लिशर्स लन्दन, 1920, पृष्ठ संख्या 41।
3. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या 42।
4. समाजवाद : डॉ0 सम्पूर्णानन्द, भारतीय ज्ञान पीठ, वाराणसी, पंचम संस्करण, संवत 2002, पृष्ठ संख्या 295।
5. गिल्ड सोशलिज्म : जी0 डी0 एच0 कोल, पृष्ठ संख्या 183.187।
6. माडर्न पोलिटिकल थियरी : सी0 ई0 एम0 जोड, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस लन्दन, 1953, पृष्ठ संख्या 54।
7. रिसेन्ट पोलिटिकल थाट : एफ0 डब्लू0 कोकर एपलीएनशन सेनचुरी प्रेस, न्यूयार्क 1964, पृष्ठ संख्या 565।
8. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या 555।
9. राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त : डॉ0 बीरकेश्वर प्रसाद सिंह, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994, पृष्ठ संख्या 270।
10. आधुनिक राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त : जगदीश चन्द्र जौहरी, सीमा जौहरी, स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा0 लि0, नई दिल्ली, 1999, पृष्ठ संख्या 565।
11. माडर्न पोलिटिकल थियरी : सी0 एम0 जोड आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस लन्दन, 1953, पृष्ठ संख्या 93।